शब्दांजलि

।काव्य संग्रह।

नन्दलाल भारती

सर्वाधिकार–लेखकाधीन

हिन्दी

हिन्द में बह चली ऐसी हवा,
हिन्दी हुई जबान।
सौभाग्य हमारा हिन्दी भाषी ,
भारत देश महान ।।
हिन्दी है नब्ज,
जन जन को है प्यारी ।
एकता समता की डोर,
हो हिन्दी राष्ट्रभाषा हमारी ।।
हिन्दुस्तान मंदिरों का देश,
गंगा जोडती जहां आस्था ।
घोलती फिजां में मिश्री,
हिन्दी एकता की है वास्ता ।।

हिन्दी हिन्दुस्तान ,
दुनिया में उजली पहचान ।
हो पढत लिखत दुनिया के आरपार,
हिन्दी हमारी आन ।।
गढती नित नव मिसाल,
हिन्दी भाषा हमारी ।
ये हवाये ये दिशायें,
पढ लेती नब्ज हमारी ।।
भारती असि को मसि कर,
लिखे राष्ट्रभाषा की गाथा ।
झूले हर जबान हिन्दी,
गूंजे धरा पर,
जय जय जय हे भारत मांता .....

लोक मैत्री

लोकमैत्री की बहारे,बिती कारी रातें
बिहसा जन जन,छायी जग में उजियारी
नया सबेरा नई उमंगे,
जीवित मन के प्रपात,
फेलने लगा अब लोकमैत्री का प्रकाश!
सदभावना का उदय,मन हुआ चेतन
जातिधर्म की बात नही,
जग सारा हुआ निकेतन !
मान्य नही जातिधर्म का समर
जयगान सदभावना का,
बिहस उठेगा जीवन सफर !
विश्वबन्धुत्व की राह,
नही होगा अब मन खिन्न !
ना होगा भेदभाव,
ना होगा आदमी भिन्न !
लोकमैत्री का भाव विश्व एकता जोडेगा

ना गैर ना बैर हर स्वर,
सदभावना की जय बोलेगा !
.....

काबिलियत पर ग्रहण लगा दोधारी,
योग्यता पर छा गयी अब महामारी !!
फर्ज और भूख ने कैदी बना रखा है
मुश्किलों के समर ने राहे रोक रखा है !!
चन्दसिक्को की बदौलत उम्र बिक रही है
श्रम की बाजार में तकदीर छिन गयी है !!
मायूसी के बादल उखडने लगे है पर
तार तार अरमानों को,
ताग ताग कर रहा बसर !!

000
धनिखाओं की बस्ती में दौलत का बसेरा !
गरीबों की बस्ती में भूख अभाव का डेरा !!
वही मुसीबतो की कुलांचे,
चिथडों में लपटे श्शरीर !
हर चौखट पर लाचारी कोस रहे तकदीर !!
गरीबो की तकदीरों पर पडते हैं डाके यहां
भूख पर रस्साकसी मतलब सधते है वहां !!
मजबूरी के जाल उम्र बेचा जाता है !
धनिखाओं की दुकान पर ,
पूरी दाम नही मिल पाता है !!
बदहाली में जीना मरना नसीब बन गया हैं
अमीर की तरक्की,
गरीब,गरीब ही रह गया है !!

सोचता हूं

सोचता हूं बार बार
बिहस पडे मेरा भी मन एक बार !
व्यवधान खडा हो जाता है कोई
उमंगे रौद देती हैं अडचने कोई ना कोई !

चहुंओर मौत के सामान बिकने लगे है
रोजमर्रा की चीजों में जहर मिलने लगे है !
महगाई है भूख हैं हवा प्रदूपित है
भागदौड भय जल भी दूपित है !
शासन है प्रशासन हैं
फिर भी रिश्वतखोरी है
समता सम्पन्न्ता के वादे तो
 बस मुंहजोरी हैं !
न्याय मदिर हैं दण्ड के विधान हैं,
फिर भी अत्याचार हैं !
बुध्द भावे की ललकार,
फिर भी अनाचार है !
चहुंओर मुश्किलों का घेरा,
कहां से आये मुस्कान
मोह मद का बाजार हावी सब है परेशान !
खुश रहने के उपाय विफल हो जाते हैं
मुखौटाधारी मतलब का,
दरिया पार कर जाते हैं !
सच भारती मैं भी सोचता हूं बार बार
विहस पडे मेंरा भी मन एक बार !!

धूप का जश्न

मुस्कराने की लालसा लिये
दर दर भटक रहा हूं !
हाल ए दिल बयान करने को तरस रहा हूं !
दर्द आंकने वाला नही मिल रहा कोई !
दर्द नाशक के बहाने,
रची जाती साजिशें कोई ना कोई !
यहां रात के अंधेरे में अट्टहास करता डर हैं !
दिन के उजाले में बसा खौफ हैं !
रक्त रंजित दुनिया के आदी हो रहे !
कही आदमी,
तो कही आदमियत के कत्ल हो रहे !

दर्द के पहाड तले दबा,
ख्वाहिशों को हवा दे रहा !
आतंक से सहमा भारती,
सर्द कोहरे से छन रही,
धूप का जश्न मनाने से डर रहा !!

विष की खेती

नेकी पर कहर बरस गया है
सगा आज बैरी हो गया है !!
हक पर जोर अजमाइश होने लगा है
लहू से खुद का आज संवारने लगा है !!
कभी कहता दे दो,नही तो छिन लूंगा
कहता कभी सपने मत देखो,
वरना आंखे फोड दूंगा !!
मय की हाला में डूबा,
कहा उसको पता
बिन आंखों के भी
मन के तरूवर पर,
सपनों के भी पर लगते हैं !!
हुआ बैरी अपना,
जिसको लेकर बोया था सपना !!
धन के ढेर बौराया मद चढा अब माथ
सकुनि का यौवन
कंस का अभिमान हुआ साथ !!
बिसर गयी नेकी दौलत का भारी दम्भ
स्वार्थ के दाव नेकी घायल,
छाती पर गम !!
नेकी की गंगा में ना घोलो जहर
ना करो रिश्ते के संग हादसे
देवता भी तरसे मानव जीवन को,
मतलब बस ना करो विष की खेती
डरा करो खुदा से .....

कविता की तलाश में

कविता की तलाश में फिरता हूं
खेत खलिहान बरगद की छांव
पोखर तालाब बूढे कुंएं
सामाजिक पतन
भूख बेरोजगारी में झांकता हूं !
मन की दूरी
आदमी की की मजबूरी में ताकता हूं !
तलाशाता हूं कविता
खादी और खाकी में !
दहेज की जलन अम्बर अर्ध्दबदन,
अत्याचार के आतंक में !
मूक पशुओं के क्रुन्दन
आदमी के मरदन में !
उचे पहाडों नीचे सममतल मैदानों में !
कहां कहां नही तलाशता कविता को !
खुद के अन्दर गहराई में
उतरता हूं
कविता को खिलखिलाता हुआ पाता हूं !
सच भारती यही तो हैं
वह गहराई,
जहां से उपतजी हैं कविता
दिल की गहराई
आत्मा की उचाई से.....

मंगल कामना

बंटवारे में विषमता मिली मुझे,
सोचता हूं,
विरासत में तुम्हें क्या दूं !
विधान संविधान के पुष्प से,
कोई सुगन्ध फेल जाये !
हृदय दीप को ज्योर्तिपुंज मिल जाये !
आशा की कली को ,
समानता का मिले उजास !

धन धरती से बेदखल
देने को बस ,
सदभावना का नैवेद्य हैं मेरे पास !
ग्रहण करों,
बुध्द जीवन वीणा के बने रहे सहारे !
चाहता हूं,
जग को नई ज्योति दो नयन तारे !
तुम्ही बताओ भारती,
शोपण उत्पीडन का विष पीकर,
साधनारत,जीवन को आधार क्या दूं !
बंटवारे में मिली विषमता मुझे,
तुम्हे मंगलकामना के अतिरिक्त,
और क्या दूं !!

वेदना के फूल

वेदना के फूल,
श्रध्दा की थाली मे भर लाया हूं !
संवेदना का गंगाजल,
पलकों पर उतार लाया हूं !
कल की आशा में,
चोटबहुत खाया हूं !
संवर जाये कल,
ऐसा गुण ढूढने आया हूं !
सूख की आशा में,
छलकते आंसू पाया हूं !
ठगा गया जीवन,
शान्ति के द्वार आया हूं !
ना रिसे घाव अब,
ऐसा मरहम खोजने आया हूं !
लोग खींचे खींचे,
मैं सदभावना का भाव मांगने आया हूं !
नफरत ने जलाया,
मैं सदप्रेम की छांव ढूढने आया हूं !
ना जाति धर्म का विप बोने,

मैं तो मानवता की बात करने आया हूं !
पलके नम दिल रोता जख्म गहरा पाया हूं !
तकदीर कैद, मैं तो फरियाद करने आया हूं !
लकीरों ने किया फकीर,
मैं तो एकता का संदेश लाया हूं !
फले फूले कायनात,
मैं तो तरक्की का वरदान लेने आया हूं !
भारती वेदना के फूल ,
श्रध्दा की थाली में भर लाया हूं !

कैसा धर्म

आजकल शहर खौफ में जीने लगा है,
कही दिल तो ,
कही आशियाना जलने लगा है !
आग उगलने वालों को भय लगने लगा है,
तभी तो श्शहर का चैन खोने लगा है !
धर्म के नाम पर लहू का खेल होने लगा है,
सिसकियां थमती नही,
तब तक नया घाव होने लगा है !
कही भरे बाजार ,
तो कही चलती ट्रेन में धमाका होने लगा है ,
आस्था के नाम पर ,
लहू कतरा कतरा होने लगा है !
कैसा धर्म,धर्म के नाम आतंक होने लगा है,
लहूलुहान कायनात धर्म बदनाम होने लगा है !
आसूंओ का दरिया,
कराहने का शोर पसरने लगा है ,
धर्म के नाम बांटने वालो का,
जहां रोशन होने लगा है !
आसूंओ को पोंछ भारती ,
आतंकियों को ललकारने लगा है
धर्म सदभाव बरसाता,

कत्ल क्यों होने लगा है !
आजकल शहर ,
खौफ में जीने लगा है.....

।। चुभन ।।

मेरी तकदीर का सुमन ना खिला
कर्म के दामन घाव क्या मिला ।
ये तुमने क्या कर दिया,
भरी महफिल में एक और नया घाव दे दिया ।
हम इतने बदनाम ना थे कभी,
पसीने से प्यास बुझाने की आदत है मेरी,
आज भी कायम हूं,
सीने में हैं घाव दी हुई तेरी ।
मैं घाव के बदले घाव नही देता,
नफरत बोना मुझे आता नही
चला था सुमन की आस में भारती,
अब तो चुभन में भी मुस्करा लेता .....

।।गांव की ओर ।।

आओ चले गांव की ओर,
जहां बसता हैं माटी में सोधापन,
जन सुमन रचता अपनापन ।
मर्यादा के माथे पल्लू सजता,
रिश्तो में स्नेह बरसता ।
गांव जहा पहले सूरज उगता,
अधियारे में जुगनू गरजता ।
पानी में मिठास पवन में सुगन्ध बहता,
गांव वही जग जिसे स्वर्ग कहता ।
शहर में बह चली आंधी पछुवाई
वहां बसती आज भी हैं पुरवाई ।
मर्यादा में लिपटा गांव स्वर्ग हैं अपना ,
वहां झरता सोधापन झराझर,
गांव का क्या कहना.....

00

गमों के दौर हैं,मेरा क्या कसूर,

हालात के सताये हो गये मजबूर ।।
छांव की आस, धूप में बहुत तपे हजूर,
बदकिस्मती हमारी काटें मिले भरपूर ।।
विपवाण का सफर,मान बैठा दस्तूर ,
आसूओ का पलकों से खेलना,
तकदीर बन गया हजूर ।।
टूटे हुए ख्वाब,
उम्मीद से खडा हूं बहुत दूर,
गमों के दौर हैं,मेरा क्या कसूर.....

मेरी गली में कभी कभी आया करो
दीन की डयोढी पर पांव पखारा करो ।
पसीने से नहाया आशियाना हमारा,
मुश्किलों के दौरा जाले जग सारा ।
परिश्रम की रोटी सेाधापन खूब सारा,
अतिथि देवोः पर यकीन हमारा ।
मेरी. गली मे कभी कभी आया करो.....
क्या कभी खुश्बू पहचान पाती,
गर दीवानेा का प्यार ना होता ।
सच हम कहां पहचान पाते,
गर आपका प्यार ना होता ।

।। दीन ।।

मेरी किस्मत को क्यो दोप दे रहा जमाना,
याद नही जमाने को हक हजम कर जाना ।
साजिश की हिस्सा है मेरी मजबूरियां,
पी लेता हू ये विप कस लेता हूं तन्हाईयां ।
रार नही ठानता मैं, खैरात चाहता ही नही,
हाड को निचोडकर दम भर लेता हूं तभी ।
हाड खुद का निचोडना आता नही,
सच तब ये दुनिया वाले जीने देते नही ।
सारेआम सौदा होता जहां चाहते बेचते वही ।
खुदा की शुक्र मजदूर हो कर रह गये ।
खुद ना बिके श्रम बेचकर जी गये ।

जमाने से रंज नही तो फक्र कैसा,
जमाने की चकाचौध में भारती,
जी लेता हूं दीन होकर भी दीनदयाल जैसा.....
हसरतों के दामन घाव मिला,मैं कसूरवार नही,
हमने लहू को पानी बनाकर सींचा,
कर्म की क्यारी क्यारी,छल मिले,
प्रतिफल की जगह,
मुझे हकदार दम्भियों ने माना ही नही ।।
00
जन्मते अंधेरा ,उजाले में पले गये थे
परायी मां के एहसान तले बढे थे ।।
बडे क्या हुए सयाने हो गये
छाती में उतार खंजर खून चूसने में लग गये ।।
पाली थी वो मां परायी गीत गा गाकर
बदनियति को देख गिर पडी गश खाकर ।।
मां थी परायी अरमान सगे बिखर गये
नेकी के दामन घाव गहरे मिल गये ।।
घात था मन मन में भयावह उनके
सगी मां बोझ समझ फेंकी थी जिनको ।।
मा परायी स्नेह थे सगे अपने
लहू से सींच बसायी थी सपने ।।
परायी मां की छांव दौडने लगे
माया की मीनार चढने लगे ।।
मां के सपने वालिदों का हक छिन गये
दया पर पाये जीवन ममता के दुश्मन हो गये ।।
00
बह रहा माथे से पसीना तरतर
दौड रहा हल की मूठ पकडकर ।।
कभी बैलो को हांक रहा
दूसरे पल लात से ढेलो को फोड रहा ।।
बैल हलधर के इशारे नांच रहे
घण्टियों के सुर में सुर मलिा रहे ।।
खेत की मांटी ढलती जा रही
हल की फाल गहरी धरती चीर रही ।।
खेत की मांटी को रंवा कर किसान

पोछ पोछ पसीना तांक रहा आसमान ।।
बीज डालता धरती की कोख में
पाकर बीज कोख झूम उठते मस्ती में ।।
किसान लहलहाती फसल देखकर,
हंस पडता है खिखिलाकर ।।
00000000
दम्भ के तूफान में ख्वाब को टूटते हुए देखा है,
दम के सहारे डूबते को किनारे लगते देखा है ।।
ख्वाब ही तो है,बढे चलो को ललकारते है,
ख्वाब को संवारने वालो को खुदा मानते है ।।
कर्म कर्मयोगी वे मान देना अपना फर्ज समझते हैं।।
एहसानमन्द कर्मयोगी,उनके फर्ज को नमन करता है
ख्वाब में तारे भरने वालो को जग देवताकहता है।।
कर्मयोगी पाये मान,जीवित रहे ख्वाब दुआ कीजिये,
गर्व कायनात को मेरा भी मुबारकवाद कबूल कीजिये।।

।। बरखा ।।

ऐसी धुन छेडी है बदरा नाच उठे हैं मोर
जंगले से झांकी गोरिया विहस उठे चितचोर ।।
आहट पाकर दादुर मचाने लगे हैं श्शोर,
बूंद बूंद में जीवन बढने लगी है प्रेम ही डोर ।।
बदरे का कारापन,नव उमंग की नई हैं डोर
नव आस बरखा में रात का छिपा है भारे ।।
बदरा की थाप नाच उठे हर चितचोर ,
तनिक इशारा राधा के जैसे नाचे थे माखनचोर ।।
आगाज है बरखा नव उत्थान का विहसा है जोश,
सम्वृध्दि समाई बरखा में झूम उठे दादुर और मोर ।।
बरस उठा अपाढ मुरझाई बेल हुई सुरख गोर,
मेढको ने थाम ली शहनाई खुशहाली चहुंओर ,
मौसम की धुन मतवाली नाच उठे मन के मोर ।।

दौलत

स्वर्ग सी धरती पर लम्हा लम्हा डंसने लगा है ।
दर्द के दामन नया दर्द मिलने लगा है ।।

दबे कुचलो की दौलत पेट की भूख ।
गमो की आंधियां अरमान रहे सूख ।।
दर्द के भार तडपना तकदीर बन गया है ।
आश्वासन की खुराक नसीब हो गया है ।।
भौतिकतावादी वक्त में साजिशे रची जाती ।
गरीब की छाती पर दर्द की गठरी भारी ।
जीने की कोशिशे लिये चिन्ता का बोझ भारी ।।
जाम की थाप विकास की बहती धारा ।
बह गये झूठे वादे ना मिला किनारा ।।
बचा कोसना तकदीर ना और सहारा ।
जुल्म का जहर कैसा नसीब हमारा ।।
दो मुहे लोग ना मिला सच्चा यार।
स्वार्थ की भूख भूंज गया दागदार ।।
कौन है दोपी गरीब गरीब है क्यो ।
आसू से गीली करता था रोटी हाल ज्यो के त्यो ।।
एक ओर भूख एक ओर दौलत और अनाज भरे गोदाम ।
चूल्हा ठण्डा गरीब के हाथ नही है काम ।।
फेरी भांजी के ठेलो पर कब्जे कैसा अत्याचार ।
बिकेगी गरीब की काया क्या ऐसा होगा व्यापार ।।
ना छिनो हाथ से काम ना खोलो अपराध की दुकान ।
हंसी खुशी समता संग जीओ कह गये बुध्द महान ।।

0000

जयगान

आओ बोये फूल काटों का क्या काम है,
गुजर जायेगा कारवां रहने वाला नाम है ।
कोयले की कोठरी से निकल चले बच के ,
पत्थरो पर कर्म के निशां छोड दे ।
आज ना आयेगी याद,यही होता आ रहा,
कल थे अजनवी,उन्हीं का गीत गा रहा जमाना ।
लकीर का नतीजा करम का है तराना ,
अनेंको दण्ड , किसी को जहर परोसा गया
काल के थे सिपाही ,आज उन्हीं को मसीहा कहा गया ।
बढे चले जहरीला तूफान में प्यारे,

कल जयगान करेगे ये जो ,
आज दुश्मन बन बैठे है हमारे ।

कत्ल

आंखे तरस रही है प्यारे दीदार नही हो रहा ,
अपने जहां में धूल और तूफान बढ रहा ।
हो रहे कत्ल दिन दहाडे, छाती पर आरा चल रहा
बिक रहे हाड मांस कोई नही खबर ले रहा ।
सिरों पर चादर थी मनोहर,
बडे बडे स्तम्भ खडे थे जैसे धरोहर ।
ठूंठ छायाविहीन तरबतर रो रोकर
हम रह गये स्वार्थी होकर ।
कब सुध लेगे जब उजड जायेगा चमन
क्या अपनों का, अपने हाथो कर देगे दमन ।
जीवन ना बने जहर ले ले वचन
लगायेगे पेड बहुत,कत्ल कोई ना करेगे सहन ।
अंखिया अब ना तरसे प्यारे
घर आंगन बिहसे हरियाले हमारे.....

00000

भूख का इलाज ढूढ ढूढ थक रहा हूं,
श्रमिक की उदासी देख तडप रहा हूं ।
झोपडी से उठ रहे धुयें में,
रोटी का,
सोधापन तलाश रहा हूं,।
तरक्की की दौड,
खुद को बहुत दूर पा रहा हूं ।
कब आयेगी चौखट तक ,
बाट जोह रहा हूं ।
मन में आस पेट में आग लिये,
फटी बनियाइन निचोड रहा हूं.....
00000

सदभावना के जंगल में
विरान पसरने लगा है,
स्नेह का बीज,
दुश्मनी की धूप में सूखने लगा है।
कही का अभाव,
कही खजाना तंग लग रहा है।
सब कुछ आज बाजार में बिकने लगा है।
व्यापार की खुमारी में,
तन का पुर्जा ,
पुर्जा तक बिकने लगा है.....
00000

द्वेप के दलदल डूब रहे हैं हम,
कहने को समभाव,
वास्तव में भेद ढो रहे हैं हम ।
महफिलों में आदमियत का नही हैं मान,
जातिधर्म का भ्रम हो गया महान ।
बजा बजा ढोल नही थक रहे भाई भाई,
धर्मान्धता के नाम बन गये हैं कसाई ।
जाति धर्म की दरिया में,
घुट्ता है दम हर पल,
मोह का कसता शिकंजा,
आदमी हो गया है कल ।
आदमियत का रिश्ता सब रिश्ते में रहे
महान,
आदमी बसन्त धरा का,
संस्कृति उज्जवल पहचान ।
आओ हर चौखट,
समभाव सदभाव की पौध लगायें,
आदमियत को,
जातिधर्म के प्रदूपण से बचाये.....
0000

।। जहर।।

खुले हैं पर हाथ बंधे लग रहे हैं,
खुली जुबान पर ताले जडे लग रहे हैं।
चाहतों के समन्दर कंकडों से भर रहे है,
खुली आंखों को अंधेरे डंस रहे है ।
लूट गयी तकदीर डर मे जी रहे है,
कोरे सपने आसूं बरस रहे हैं।
फेले हाथ नयन श्शरमा रहे है ,
चमचमाती मतलब की खंजर,
बेमौत मर रहे है ।
समझता अच्छी तरह क्या कह रहे हैं,
बंधे हाथ खुले कान सुन रहे हैं ।
बंदिशों सें घिरे वंचित,ताक रहे हैं,
छिन गया सपना कल को देख रहे है ।
भीड भरी दुनिया में अकेले लग रहे है,
अपनों का भीड में पराये हो गये हैं ।
झराझर आंसूंओ को कुछ तकदीर कह रहे हैं,
आगे बढने वाले ,
पत्थर पर लकीर खींच रहे हैं ।
क्या कहें कुछ लोग,
खुद की खुदाई पर विहस रहे हैं ,
कैद तकदीर कर जाम टकरा रहे हैं।
दीवाने धुन के भारती,जहां आंसू से सींच रहे हैं,
उभर जाये कायनात जहर पी रहे हैं.....

00000

तबाही पर किसी की किसी का,,
आज विहस रहा है,
आंसूंओ पर रोशन जहां हो रहा है ।
मैं कैछ तकदीर को आस से जोड रहा हूं,
हाल पर खुद के बेहाल हो रहा हूं ।
एक ओर रोटी पर दंगल,
दूसरी ओर ताला लटक रहा ।

सच कोई आसूंओ में,
कोई जाम में नहा रहा.....
00000
खुशियों के सिर चढने वाला,
विलख रहा था
अधखिला सा यौवन तडप रहा था ।
लाल सुर्ख थी पंखुडियां
मातम मना रही थी तितलियां ।
आदमी डाल से नोंच कर फेंक दिया था
बेकद्री पर वह सिसक रहा था ।
वक्त था राहो में बिछना,
नसीब समझता था
बालाओं के सिर चढ इतराता था ।
वक्त की बेवफाई,
सरेआम कुचला जा रहा है आज,
दिखावा चकाचौंध कुपोपित मन का साज ।
पुप्प की देख वेदना आसूं गिर पडे
वसूलो पर मरने वाले आदमी,
और मुझे एक से लगे.....

माना मुश्किलों के दौर है,
तो क्या हुआ,
वक्त गवाह है,
आंधियों ने कब दिया है दुआ ।।
कलम के सिपाही ,
कहां खौफ खाते है ।
हर अंधियारे को रौंद जाते है ।।
00000

कैद मुकदर की जमानत पर,
लम्हा लम्हा रिस रहा है ।
बेदाग सी जिन्दगी पर,
दरारों का दाग लग रहा है ।
आबरू पर कुर्बान,
फरेब बेआबरू र रहा है ।
विपबेल चढ चुकी सिर पर,
आदमी लकीर खींच रहा है.....

बडे घाव हैं जिगर में,छिपाने से नही
छिपते,
उतरते नही लब्ज जबान पर इशारे
खुद कहते।
कहने से भी क्या हुआ रह गये
तरसते,
अपनों ने ठगा रह गये हाथ मलते ।
तबाही की फिक्र हमें हम भी हैं
डरते,
मतलब की दुनिया दिन अब नही
फिरते ।
अधिकर की दुहाई, इंकलाब को कहते,
पीये जहर बहुत, अब ललकार हैं
करते ....
00000

कर गया छेद मन मेरा तीर उनका,
हाथों जिनके जहर मढा था –
क्या बयां करू हाल उनका ।
राह में बारूद बिछाये है जालिम आज
भी
हर वक्त फूटने का डर है जिनका ,
उत्थान मन्तव्य मेरा विखण्डन है
उनका ।
घाव में बसर करना तकदीर हो गया

अपना,
फूट गयी किस्मत,
टूटी तस्वीर हो गया सपना.....
00000

माटी का घर

एक एक टोकरी माटी को जोड़कर
खडा था एक घर !
जला करता था,
नन्हा सा दीया जहां डयोढी पर !
जिसे सब पहचानते थे
छोटा बडा अमीर गरीब भी !
मां की तपस्या और,
त्याग के बलबूते खडा था यह घर !
घर के सकून में श्शामिल था
बाप का पुरूपार्थ और,
रिश्ते का सोधापन भी !
दुनिया की चकाचौध से दूर
पहुचा जा सकता था जहां
कच्ची सडको या पगडण्डियों से होकर !
जहां उगता हैं सूरज पहले आज भी !
उतरा करती थी,
खुशी के झोके की हवा !
तंगी में भी जहां होता था मां का हाथ दवा !
मां की तपस्या और ,
बाप के पुरूपार्थ से खडे घर पर !
कागा दृप्टि पड गयी,
टुकडे टुकडे हो गया
माटी के ढेलें पर भी कब्जा हो गया!
रिश्ते के ही लोगो ने आतंक मचा दिया !
रोटी रोजी को तलाशता मै भी,
पहुंच गया गावं से दूर बहुत दूर

ईंट पत्थरों के श्शहर में !
एक आशियना मैने भी खडा कर लिय !
अपनी साठ साल तक की उम्र को बेचकर !
आसपास जहां लोग तो बसते हैं,
पर जिन्दा लाश होकर !
बेचैन हो जाता हूं रह रह कर !
ढूढता हूं,
मानवीय रिश्तो की सुगन्ध और,
अपनेपन का एहसास भी !
नही मिलता हैं कहीं
माटी के घर सी छांव
नही सोधेपन का भाव पुराने गांव सा!
ईंट पत्थरों के श्शहर में
कैद हो गया हूं जैसे,
बडी बडी इमारतो से घिरे
परिश्रम के ईंट पसीने के गारे की ,
नींव पर टीके अपने ही घर में !!
00000

दरकार

आज दौर सामने जो खडा है ।
गलत बयानबाजियों ने जोर पकडा है ।।
दर्द की बयार है,खुदा भी गवाह है ।
घायल मैं भी, दिल में भरी आह है ।।
आज अपनों की आंखों मे परायापन है ।
दौर है कातिल,सब ओर सूनापन है ।।
गुजर रहा जिस बुरे दौर से ।
शूलो का सफर सींच रहा अश्रु से ।।
दगाबाजी से मुकदर कांपने लगा है ।
खण्डित आज का आदमी बेवफा हो गया है
जानता है हर शख्स कुछ नही ले जाने को ।
सम्भाल बैठा है,अभिान के खजाने को ।।
नफरत जवां,लकीरो पर हो रही तकरारे ।
दर्द का बढता दरिया,नित बढ रही रारे ।।
शराफत की चादर में ढंका घायल घराने में ।
बढ रहा खौफ,भरे जहां के विराने में ।।

थक रहा कर कर जमाने से गुजारिस यारो ।
जग उठो, ढहाने बांटने वाली हर दीवरें ।।
बैर में खैर नही,मोहब्बत की दरकारे ।
मिला लो हाथ भारती ना सगुन लाई है रारे।।
00000

नारायण

गरीब के दामन दर्द,
चुभता निशान छोड जाता है ।
दर्द के बोझ जवां,
बूढा होकर रह जाता है ।।
दर्द में झोकने वाला ,
मुस्कराता है किनारे होकर ।
बदनसीब थक जाता हैं ,
दर्द का बोझ ढोकर ।।
शोषण वंचित का,जुल्म आदमियत पर ।
दर्द का जख्म रिस रहा,
उंचनीच के नाम पर ।।
मातमी हो जाता है,
गरीब का जीवन सफर ।
सांस भरता गरीब अभावों के बोझ पर ।।
जंग अभावो से,हाफ हाफ करता बसर ।
चबाता रोटी,आंसूओ में भीगोकर ।।
उत्पीडित नही कर पाता पार,
दर्द का दरिया जीवन भर ।
दिया है दर्द जमाने ने दीन जानकर ।।
गरीब का दामन ,
रह गया जख्म का ढेर हाकर ।
दर्द भरा जीवन,
कटते लम्हे कांटों की सेज पर ।।
अब तो हाथ बढाओ भारती,डूबते की ओर ।
वंचित हैं,उठ जाओगे,नर से नारायण होकर ।।
00000

दरिद्रनारायण

मै ऐसे गांव की माटी में खेला हूं
जहां खेतिहर मजदूरो की चौखट पर नाचती है
भय और दरिद्रता आज भी
वंचितों की बस्ती अभिशापित है
बस्तियों के कुये का पानी अपवित्र है आज भी
भूख नंगा मजदूर ना जाने कब से हाड फोड रहा है
न मिट रही भूख ना ही तन ढंक पा रहा है
कहने को आजादी है पर वो बहुत दूर पडा है
भूमिहीनता के दलदल मे खडा है
भय से आतंकित कल के बारे में कुछ नही जानता
आंसूं पोछता आजादी कैसी वह यह भी नही जानता
वह जानता है खेत मालिकों के खेत में खून पानी करना
मजबूरी है उसकी भूख भय और पीडा मे मरना
कब सुख की बयार बही है उसकी बस्ती में
इतिहास भी नही बता सकता सही सही
पीडित जन भयभीत बंटवारे की आग से
वह भी सपने देखता है
दुनिया के और लोगो की तरह गांव की धूप में पक कर
उसके सपनो को पंख नही लग पाते
उसे भी पता लगने लगा हैं दुनिया की तरक्की का
आदमी के चांद पर उतर जाने का भी
वह नही लांघ पर रहा है मजबूरी की मजबूत दीवारें
वह दीनता को ढेाते ढोते आसू बोता हुआ
कूंच कर जा रहा है अनजाने लोक को
विरासत में भय भूख और कुछ कर्ज छोडकर
अगला जन्म सुखी हो
डाल देते हैं परिजन मुंह में गंगाजल
मुक्ति की आस में दरिद्रनारायण को गुहारकर
मैं भी माथा ठोक लेता हूं
पूछता हूं क्या यही तेरी खुदाई है ६
क्या इनका कभी इनका उध्दार होगा ६
सच भारती मैं ऐसे गांव की माटी में खेला हूं
जहां अनेंकों आंसू पीकर बसर कर रहे है आज भी.....
00000

।। प्रतिकार ।।

याद है वो बीते लम्हे मुझे
भूख से उठती वो चीखे भी
जिसको रौद देती थी
वो सामन्ती व्यवस्था
डर जाती थी
पूरी मजदूरों की बस्ती
खौफ में जीता था हर वंचित
दरिद्रता बैठ जाती चौखट पर
काफी अन्तराल के बाद सूर्योदय हुआ
दीन बहिष्कृत भी,
सपनों का बीज बोने लगा
वक्त ने तमाचा जड दिया
हैवानियत के गालों पर
दीन का मौन टूट गया है
दीनता का हिसाब मांगने लगा है,
आजाद हवा के साथ कल संवारने की सोच रहा है
आज भी गिध्द आंखे ताक रही है
तभी तो दीन दीनता से,
उबर नही पा रहा है
बुराईयों का जाल टूट नही रहा है ।
आओ करें प्रतिकार
बेबस भूखी आंखों में झांक कर,
कर दे सम्बृधि का बीजारोपण .....
00000

पड़ाव

कुछ लेागो का मानना है कि,
मैं हार चुका हूं ।
सच ये नही है
दो वक्त की रोटी जीत नही होती
मैं संघर्परत् हूं
हां मै खंजर पास नही रखता
मेरी म्यान में कलम होती है,
स्याही से भरी और दिल में शब्दों की तीर

मैं शोला भी नही उगलता कलम से
क्योंकि मेरा मकसद जहर बोना नही है
मैं समानता का बीज बोना चाहता हूं ।
आदमी को आदमी के पास लाना चाहता हूं ।
मैं नही चाहता कि,
आदमी जाति धर्म के नाम पर बिखण्डित रहे ।
भले ही अर्थ की तुला पर व्यर्थ हूं
दिल मे हौशले रखता हूं
आदमी की आन मान शान को पहचानता हूं
सच यही है उद्देश्य मेरा,
समानता से दूर बैठे आदमी के लिये संघर्परत् हूं ।
मौन ही सही
हारकर भी उठा लेता हूं कलम,
आदमियत के लिये तो जी रहा हूं
जानता हूं जीवन का अन्तिम पडाव है मृत्यु
मेरे जीवन का अर्थ है समभाव
सच इसीलिये तो जी रहा हूं
वरना कब का जीवन के ,
अन्तिम पड़ाव को पार कर लिया होता ।

00000

।। जहर।।

खुले हैं पर हाथ बंधे लग रहे हैं,
खुली जुबान पर ताले जडे लग रहे हैं।
चाहतों के समन्दर कंकडों से भर रहे है,
खुली आंखों को अंधेरे डंस रहे है ।
लूट गयी तकदीर डर मे जी रहे है,
कोरे सपने आसूं बरस रहे हैं।
फेले हाथ नयन श्शरमा रहे है ,
चमचमाती मतलब की खंजर,
बेमौत मर रहे है ।
समझता अच्छी तरह क्या कह रहे हैं,
बंधे हाथ खुले कान सुन रहे हैं ।
बंदिशों सें घिरे वंचित,ताक रहे हैं,

छिन गया सपना कल को देख रहे है ।
भीड भरी दुनिया में अकेले लग रहे है,
अपनों का भीड में पराये हो गये हैं ।
झराझर आंसूंओ को कुछ तकदीर कह रहे हैं,
आगे बढने वाले ,
पत्थर पर लकीर खींच रहे हैं ।
क्या कहें कुछ लोग,
खुद की खुदाई पर विहस रहे हैं ,
कैद तकदीर कर जाम टकरा रहे हैं।
दीवाने धुन के भारती,जहां आंसू से सींच रहे हैं,
उभर जाये कायनात उम्मीद में,जहर पी रहे हैं.....

00000

तुला

नागफनी सरीखे उग आये है कांटे
दूषित माहौल में
इच्छायें मर रही है नित
चुभन से दुखने लगा है रोम रोम।
दर्द आदमी का दिया हुआ है
चुभन कुव्यवस्थाओ की
रिसता जख्म बन गया है
अब भीतर ही भीतर ।
हकीकत जीने नही देती
सपनों की उडान में जी रहा हूं
उम्मीद का प्रसून खिल जाये
कहीं अपने ही भीतर से ।
डूबती हुई नांव में सवार होकर भी
विश्वास है हादसे से उबर जाने का
उम्मीद टूटेगी नही

क्योंकि मन में विश्वास है
फौलाद सा.....
टूट जायेगे आडम्बर सारे
खिलखिला उठेगी कायनात
नही चुभेगे नागफनी सरीखे कांटे
नहीं कराहेगे रोम रोम
जब होगा अंधेरे से लडने का सामर्थ्य
पद और दौलत की तुला पर भले ही दुनिया कहे व्यर्थ.....

00000

तस्वीर

ये कैसी तस्वीर उभर रही है,
आंखों का सकून,
दिल का चैन छिन रही है ।
अम्बर घायल हो रहा है ,
अवनि सिसक रही है ।
ये कैसी तस्वीर उभर रही है.....
चहुंओर तरक्की की दौड है,
भष्ट्राचार,महंगाई मिलावट का दौर है ।
पानी बोतल में कैद हो रहा है,
जनता तकलीफों का बोझ ढो रही है।
ये कैसी तस्वीर उभर रही है.....
बदले हालात में,
सांस लेना मुश्किल हो रहा है ,
जहरीला वातावरण बवण्डर उठ रहा है।
जंगल और जीव तस्वीर में जी रहे है,
ईंट पत्थरों के जंगल की बाढ आ रही है ।
ये कैसी तस्वीर उभर रही है.....
आवाम शराफत की चादर ,
ओढ सो रहा है।
समाज, भेदभाव और गरीबी का,
अभिशाप ढो रहा है ।
एकता के विरोधी,
खंजर पर धार दे रहे है,
कही जाति कही धर्म की तूती बोल रही है।

ये कैसी तस्वीर उभर रही है.....

आदमी बदल रहा है

देखो आदमी बदल रहा है.
आज खुद को छल रहा है,
अपनों से बेगाना हो रहा है
मतलब को गले लगा रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....
और के सुख से सुलग रहा है
गैर के आंसू पर हंस रहा है,
आदमी आदमियत से दूर जा रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....
आदमी आदमी का नही हो रहा है
आदमी पैसे के पीछे भाग रहा है
रिश्ते को रौंद रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....
इंसान की बस्ती में भय पसर रहा है
नाक पर स्वार्थ का सूरज उग रहा है
मतलब बस छाती पर मूंग दल रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....
खून का रिश्ता घायल हो गया है
आदमी साजिश रच रहा है
आदमी मुखौटा बदल रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....
दोप खुद का समय के माथे मढ रहा है
मर्यादा का सौदा कर रहा है
स्वार्थ की छुरी तेज कर रहा है
देखो आदमी बदल रहा है.....

डर

आसपास देखकर डर जाता हूं
कहीं से कराह कहीं से चीख ,

धमाको की उठती लपटें देखकर ।
इंसानों की बस्ती को जंगल कहना,
जंगल का अपमान होगा अब
ईंट पत्थरों के महलों में भी इंसानियत नही बसती।
मानवता को नोंचने ,इज्जत से खेलने लगे है
हर मोड मोड पर हादसा बढने लगा है ।
आदमी आदमखोर लगने लगा है
सच कह रहा हूं
ईंट पत्थरों के जंगल में बस गया हूं ।
मैं अकेला इस मंजर का साक्षी नही हूं
और भी लोग है,
कुछ तो अंधा बहरा गूंगा बन बैठे है
नही जमींर जाग रहा है
आदमियत को कराहता हुआ देखकर ।
यही हाल रहा तो वे खूनी पंजे
हर गले की नाप ले लेगे धीरे धीरे ।
खूनी पंजे हमारी ओर बढे उससे पहले,
शैतानों की शिनाख्त कर बहिप्कृत कर दे
दिल से घर परिवार समाज और देश से ।
ऐसा ना हुआ तो खूनी पंजे बढते रहेगे,
धमाके होते रहेगे, इंसानी काया के चिथडे उडते रहेगे
तबाही के बादल गरजते रहेगे
इंसानियत तडपती रहेगी नयन बरसते रहेगें
शैतानियत के आतंक से नही बच पायेगे
छिनता रहेगा चैन कांपती रहेगी रूंह
क्योंकि मरने से नही डर लगता
डर लगता है तो मौत के तरीकों से.....

00000

मुखौटा

बेकसूर चोट खाये है बहुत राह चलते चलते ।
बेगाने जहां में जीते रहे मरते मरते
जहर पीये भेद भरी दुनिया में गम से दबे डूबे रहे

आतंक अपनों अमानवीय दरारों की धूप छलते रहे
आदमी द्वारा खींची लकीरों पर मरते रहे
ना मिली छांव रह गये दम्भ में भटकते भटकते
बेकसूर चोट खाये है राह चलते चलते.....
उम्मीद की जमीं पर विश्वास की बनी है परतें
विरोध की बयार में भी दिन गुजरते रहे
स्याह रात से बेखबर उजास ढूढते रहे
घाव के बोझ फूंक फूंक कदम रखते रहे
बिछुड गये कई लकीर पर फकीर रहते रहते
बेकसूर चोट खाये है बहुत राह चलते चलते.....
दिल में जवां मौसमी बहारे गुजर रही यकीन पर रातें
ना जाने कौन से नक्षत्र वक्त ने फैलायी थी बाहें
कोरा मन था जो, बेबस है अब भरने को आहें
आदमी की भीड में थक रहे अपना ढूढते ढूढते
बेकसूर चोट खाये है बहुत राह चलते चलते.....
नही अच्छा बंटवारा धर्म के नाम पर, जुल्म रोकिये
खुदा के बन्दे है सच्चे, छोटे हो या बडे बन्दे को गले लगाइये
समता शान्ति के नाम मुखौटे को नोंच दीजिये
कारवां गुजर गया ना मिला सकून लकीर पीटते पीटते
बेकसूर चोट खाये है बहुत राह चलते चलते.....

00000

डराते है धमकाते है चुप रहने को कहते है,
अपने विधान का पालन करने को कहते है।।
नाइंसाफी की बयार खुद श्रेष्ठ समझते है
लोग अब आतंक की भाषा को समझते है ।।
मन नही मानता विरोध करने को ललकारता है
आत्मसम्मान संग जीने को कहता है ।।
कैसे चुप रहकर अंधी राह चलता जाऊंगा
स्वहित में जीवन संग्राम नही जीत पाऊंगा।।
ना बुध्द ना गुरूनानक ना चुप रह पाये महावीर
अहंकार की मीनार पर कर गये प्रहार दास कबीर ।।
हम चल पडे अब सर्वजन हिताय की राह,

करे अटखेली सिर चढ बहुजन सुखाय की चाह ।।
00000
बो रहा हूं सपने आज ,
कल ना होकर भी गीत सुनाउंगा
क्या जोडू क्या घटाउं क्या संचय कर जाउंगा ।।
एक कठपुतली जब तक सांस नाचता रह जाउंगा
जीवन टंगा फर्ज की खूंटी ,यही लटका रह जाउंगा ।।
वक्त बदलता रंग कहां एक सा रह पाउंगा
रूप बदले रंग बदले पर फर्ज से ना भटकूं,
यही भीख खुदा से मांगूगा.....
00000
घायल मुस्कान,कान खडे हो रहे है
शब्द बेअसर लोग मौन हो रहे है ।।
चीख है पुकार है लोग आंसू बहा रहे
मुश्किलें खडी करने वाले जाल बिछा रहे ।।
मर चुकी संवेदना खुद खुदा बन रहे
दीन दुनिया से बेखबर पत्थरों से खेल रहे ।।
देखो वे किसी ना किसी भार से दबे कराह रहे
उठा लो फर्ज की कटार,वे राह ताक रहे.....
00000

स्वस्थ वातावरण–स्वस्थ जीवन

पेडों की बेखौफ कटाई छाती पर हुए बहुत प्रहार
दोहन का दर्द झेल झेल धरती मां हुई बीमार ।।

बढता प्रदूषणण रोज रोज घटती हरियाली
महामारी का डर जीवन खतरे से नही खाली ।।

जोरो पर पेडों की कटाई जमीन का उत्खनन
कार्बन कीं बढोतरी कम होती आक्सीजन ।।

धूल धुआं बदरंग कर रहा जमीन आसमान
दमा क्षय त्वचा रोग का दंश झेल रहा इंसान ।।

बढता प्रदूषण घटता पानी नित कम होता खाद्यान
ग्लोबल वार्मिग की वार्निग चेता जा अब लोभी इंसान ।।

प्रकृति का शोषण ,बाढ सुनामी भूकम्प के गहरे घाव
प्रदूषण जहरीली गैसों का दाता नित देता रिसते घाव ।।

पेट्रोल पदार्थो और कोयले का करे कम से कम हो उपभोग
स्वस्थ वातावरण में निहित खुशहाल जीवन का योग ।।

हाथ जोडता हूं आओ पर्यावरण सुरक्षा की कसम दोहराये
ग्लोबल वार्मिग के विरूध्द पेड को ही हथियार बनाये .....

बरसात

पहली बरसात ने शहनाई का एहसास करा दिया ।
पंक्षियों के समूहगान ने द्वारपूजा लगाा दिया ।।
गुडहल,कनेर के फूलों ने नवश्रृंगार कर दिया।
पेडरहित महलों से मेरे छोटे से घर को ,
नये रंग में रंग दे दिया ।।
बादाम,अशोक नीम और दूसरे छोटे बडे पौधे,
मस्ती में झूम रहे थे ।
चमेली सेमल के फूल इत्र छिडक रहे थे ।।
रंग बिरंगी पंक्षियां नाचने में मस्त थी ।
अमरूद का पेड हवन कर्म में व्यस्त था ।
बूंद बूंद रोकर,अवनि को समर्पित कर रहा था ।।
समीर संग नीर मेरे मन को स्पर्श करने लगा था ।
अबोध बच्चा जैसे कोई सहला रहा था ।।
बरसात के अद्भूत रोमांच से ,मेरा भी कवि मन जाग उठा ,
मैने कलम उठा लिया .....

विषबीज

चक्रव्यूह में फंसा,सोचता हूं
आखिरकार वह कौन सी योग्यता है

मुझमें नही है जो,
उंची उंची डिग्रियां है मेरे पास,
सम्मान पत्रों की सुवास भी तो हैं
अयोग्य हूं फिर भी, क्यूं..... ?
शायद अर्थ की तुला पर व्यर्थ हूं
नहीं नही.....
पद की दौलत मेरे पास नहीं है
बडी दौलत तो है , कद की
सारी दौलत उसके सामने छोटी हैं
फिर भी अस्तित्व पर हमला,जुल्म शोषण,
अपमान का जहर,भेद की बिसात.....
ये कैसे लोग है ? भेद के बीज बोते हैं,
बडा होने का दम्भ भरते हैं
अयोग्य होकर कमजोर की योग्यता को नकारते हैं
आदमी को छोटा मानकर दुत्कारते है
सिर्फ जन्म के आधार पर
कर्म का कोई स्वाभिमान नहीं.....
ये कैसा दम्भ है बडा होने का ?
पैमाइस में छोटा हो जाता है,
उंचा कर्म उंचा कद और मान सम्मान भी.....
कोई तरीका है,
विषबीज को नष्ट करने का आपके पास
यदि हां तो श्रीमान्जी अवश्य अपनायें
गरीब,वंचित उच्चकर्म और कदवान को,
कभी न सताने की कसम खाये ।
सच्ची मानवता है यही
और
आदमी का फर्ज भी.....

सम्भावना के फूल

जख्म पर जख्म अपने ही जहां में,
साथ चलने वाला ना मिला ।
रोटी का बन्दोबस्त
सिर की छांव का इन्तजाम पसीने के भरोसे,

विभाजित जहां में सम्मान ना मिला ।
सर्वससमानता के नारे कान तो गुदगुदाते ,
जख्म के अलावा कुछ न मिला ।
भ्रमबस माना तकदीर के खिल गये फूल
हकीकत में टूटा हुआ आईना मिला ।
घाव और गहरा हो गया,
जब आदमी के चेहरे पर,
मुखौटा ही मुखौटा मिला ।
कथनी और करनी को खंगला जब
आदमियत का लहूलुहान चेहरा मिला ।
आंखेा में सपने,दिल घायल मगर
अपनों की महफिल में मीठा जहर मिला ।
बडी मन्नते थी चखें आजादी का स्वाद असली
बिखर गयी उम्मींदे,
मानवीय एकता को ना अवसर मिला ।
छायेगी समता चौखट चौखट होगी सम्पन्नता
सम्भावना का है भारती फूल खिला.....

00000

सपना

कैसी आजादी उम्मीदों के टूट गये पंख,
जुल्म अत्याचार भ्रष्टाचार अवन्नति के जमे हैं पंख ।
देश की जनता देख चुकी अपनी संसद में दंगल,
सांसद खींच रहे थे कुर्सी उडे नोट के बण्डल ।
सत्ता के भूखों को जन–देश की कहां चिन्ता,
जोड–तोड से कुर्सी हथियाना यही हैं चिन्ता ।
होती चिन्ता तो लोकतन्त्र के छाती में खंजर धंसता
आमजन करता गर्व, सद्भावना का डंका बजता ।
ना संवरती लकीरें ना खण्ड खण्ड में आदमी बंटता,
देश–जन के रक्षक को ना कोई जन भक्षक कहता ।
देख बुरा हाल लगता असली आजादी है अभी दूर ,
ना थी ऐसी उम्मीदे सत्ता भूखे सुखभोगे भरपूर ।
मेहनतकश पसीने की रोटी आंसू से गीला करता
भेद–गरीबी के दलदल में फंसा आजादी पर गर्व करता ।

किस रंग में रंग दी आजादी सत्ता के भूखों ने,
क्या यही सपना देखा था देश के अमर शहीदों ने ।
कसम है सत्ता के भूखों ना बदलों पल-पल चेहरे,
स्वहित में ना जीओ,सींचो आमजन के सपने सुनहरे ।
उम्मीदें हैं टूटी ना पूरा हुआ असली आजादी का सपना,
आजादी का ये दिन लेकर आया है नई सम्भावना ।
कर्जदार है हम सभी आजादी के अमर दीवानों के,
उठा ले बीडा देश समाज को खुशहाल बनाने के ।
ध्यान भारत मांता का, करें शक्ति का आह्वाहन
राष्ट्रहित-जनहित मे स्वार्थ का करें हर बलिदान ।
मन्तव्य को दोहराये, करे अमर शहीदों की वन्दना ,
बहुजनहिताय बहुजन सुखाय का बाकी है सपना ।

00000

अस्तित्व

चिन्ता की चिता पर सुलगते हुए
अस्तित्व संवारने में जुट गया हूं,
बाधायें भी निर्मित कर दी जाती है,
थकने लगा हूं बार बार के प्रहार से
मैं डरता नही हार से क्योंकि,
बनी रहती है सम्भावनायें जीत की ।
अर्न्तमन में उपजे सद्विचारों में
अस्तित्व तलाशने लगा हूं,
मेरी दौलत की गठरी में है,
कुलीनता,कर्तव्य,निष्ठा,आदमियत
बहुजन सुखाय के ज्वलन्त विचार ।
जानता हूं पीछे मुडकर देखता हूं
विश्वास पक्का हो जाता है कि,
मैं भी स्थायी नही परन्तु स्वार्थी नही हूं ।
मैं दौलत संचय के लिये नही,
अस्तित्व के लिये संघर्षरत् हूं ।
टूटा नही है मेरा विश्वास हादसों से
निखरी नही है मेरी आस जानता हूं

सम्भावनाओं के पर नही टूटे हैं
भले ही दौलत की तुला पर निर्बल हूं ।
कलम का सिपाही हूं,
बिखरी आस को जोडने में लगा हूं
चिन्ता की चिता पर सुलगते हुए भी
कलम पर धार दे रहा हूं ।
अभी तक टूटा नही हूं मै।
दिल की गहराई में पड़े हैं
ज्वलन्त सद्विचारों के ज्वालामुखी जो,
अस्तित्व को जिन्दा रखने के लिये काफी हैं .....
00000

गुरू वन्दना

आओ करें गुरू वन्दना
मुबारक दिन पूजा का है त्यौहार ।
मन भर भर आशीश, कर जाये भवसागर

गुरू महिमा की बजती ढोल नाचा है संसार ।
आओ करें गुरू वन्दना
मुबारक दिन पूजा का है त्यौहार .....
गुरू की चोट निराली ना हो तनिकों घाव
गुरू की शीतल छांव मिट जाते सब पाप
बाहर की चोट, मिटावे अन्दर की खोट
चरणों में लोट भरे ज्ञान का भण्डार
आओ करें गुरू वन्दना
मुबारक दिन पूजा का है त्यौहार .....
गुरू, शिष्य-विकास का ढोता बोझ
सच्चे गुरू की आत्मा यही, यही है जोश
रिश्ते की कसौटी पर खरा उतरता
समानता की डोर,जाति धर्म नहीं आधार

आओ करें गुरू वन्दना
मुबारक दिन पूजा का है त्यौहार .....
दुनिया की आस गुणवान शिक्षा पर टिका विकास
नैतिक मूल्यों और संस्कारों का बांटे उजास
–निर्माण युग निर्माण गुरू का चमत्कार
हमारा भी कर्तव्य, मोड दे श्रध्दा की धार,
आओ करें गुरू वन्दना,
मुबारक दिन पूजा का है त्यौहार .....

।। निशान ।।

चाहता हूं सद्भाववना की उजली तस्वीर बना दूं
जमाना मुड मुडकर देखे और इतरायें
कोशिश और मेहनत भी करता हूं दिन रात
पर ये क्या तस्वीर उभर नही पाती
रंग धर नहीं पाती है परछाईयों के घाव से ।
मैं भयभीत रहने लगा हूं
सपने टूटने उम्मीदें बिखरने लगी है
श्रम के गारे की दीवार ढहने लगी है,
आंसूओं के रंग को परछाईयों का कुहरा ढंकने लगा है
सम्भावना पर कब तक जी पाऊंगा
सोच सोच कर आतंकित रहने लगा हूं ।
संवेदना शून्य बना दिया हैं लोगों को
मानवीय रिश्ते में दरार डाल दिया है
आज भी परछाईयां संवर रही हैं
चैन से जीने भी नही देती हैं ये परछाईयां ।
बिखर गया है भविष्य और सपने भी
योग्यता हारने लगी हैं परछाईयों के आगे,
विषबाण सरीखे बेधने लगी हैं
भविष्य को सम्भावनाओं में ढूढ रहा हूं

चौपट तो हो गये है सपने मेरे
पर डर भी अभी बाकी है
कहीं परछाईयों के आतंक से ,
निशान ना मिट जाये ,
पसीने और आंसूओं के मेरे.....

।। शिनाख्त ।।

शिनाख्त कर ली है मैंने, कातिलों की,
वही है वे जो चाहते है,
दूर रहूं ,आंख उठाकर भी न देखू
मेरी आंखों की बाढ और टूटते हुए सपने,
अच्छे लगते है उनको ।
धुन का पक्का हूं मैं भी
बदले का भाव मेरे मन में नही है,
ना किसी तरह का कोई बैर भी ।
निखरी छाप छोड़ना चाहता हूं
कातिलों के हमले थम नही रहे हैं
चाहते हैं कैदी बना रहूं ।
विकास की दौड़ में बहुत पीछे छूट गया हूं
कातिल है कि पीछे ही खींचने में जुटे है,
मैं आगे जाना चाहता हूं
शदियों की खींचातानी में पर उखड गये हैं
तरक्की से वंचित हो गया हूं ।
खींचातानी में पांव नही जमा पा रहा हूं
धैर्य मजबूत होता जा रहा है
विकास की बयार चौखट तक नही पहुंच रही
है
कुछ लोग धर्म–जाति का जहर बो रहे है ।
सच यही विकास के दुश्मन है,
समाज को बिखण्डित करने के बहाने है,
नफरत के तराने है
उग्रवाद के पोषक है,वंचितों के शोषक है ।

शिनाख्त तो हो गयी है कातिलों की
खुद को खंगाल ले,मानवता का दामन थाम ले,
कर दे कातिलों को अपने से बहुत दूर
क्योंकि ये कातिल विकास में बाधक है
और कायनात के दुश्मन भी .....।

बरसा

बादलों की बारात को देखकर आंखों को सकून
कानों को शहदनाई के स्वर गुदगुदाने लगते है ।
तनिक भर में अंवारा हवाओं का झोंका आता है
उम्मीदों को कुचल कर दूर चला जाता है ।
यही देखते सुनते मौसम गुजर गया है
अब तो उम्मीदों का पर भी उखड़ गया हैं ।
बादलों को दोष क्यों दूं
वे तो पूरी तैयारी से आते है ।
पत्थरों के जंगल रिझा नही पाते है ,
अवारा हवा के वेग से दूर बरस जाते है।
आदत हो गयी है दूसरे पर दोष मढने की
वक्त की कमी है पीछे मुडकर देखने की ।
सूखा के लिये मौसम नही,आदमी दोषी है
हरियाली की चादर भाती नही,
अंधी दौड़ के आगे सूझता नहीं ।
उजड़ गये जंगल मर रहे पेड़ बेमौत,
नदियां गंदगी का बोझ ढो ढोकर दम तोड़ रही ।
कहीं बाढ का प्रकोप तो कहीं सूखा
कौन हैं जिम्मेदार ?
बादलों का दोष नही वे आते है बरसने के लिये
धरती का श्रृंगार भरने के लिये ।
प्रदूषण की खड़ी मीनार के आगे हार जाते है
अंवारा हवा के वेग से लाचार लौट जाते है ।
मेघराज रूठे नही है,

आते है पर स्वागत का इंतजाम नही ।
खा ले कसम अवनि को है गहना पहनाना,
घर आंगन,सड़क किनारे और बंजरभूमि में है पेड़ लगाना ।
मेघराज की आयेगी बारात,बरसात की बजेगी शहनाई
बच्चे बूढे सब हंसी खुशी गायेगे
बरसा ऋतु आई बरसा ऋतु आई.....

ललकार

आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी
करते रहे याचना तो बूढी व्यवस्था योंहि डंसती रह जायेगी
हो गयी है ताकत पास संघर्ष के हुंकार लगाने की
शक्ति है पास वंचितों हक की उद्घोषणा करने की ।।
आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी.....
सच्ची बात कहूं प्यारे जब वो पास आयेगी
सच तब ये माटी अपनी खिलखिला जायेगी
संघे शक्ति के बल होगे अपने मनोरथ पूरे
जब हाथ बढ़ेगे साथ सारी विपदा छंट जायेगी।।
आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी.....
विषमता की डोर फांसी का फन्दा कहलायी है
ये महाठगिनी आदमियत को दुत्कारी है
वंचित पशु सरीखे,तकदीर हुई कैद दुनिया जानी है
उंच-नीच की चक्की तनिको रास ना आयेगी ।।
आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी.....
खून हुआ पसीना तन थककर हुआ है कांट
ना मिली तरक्की कब तक ढोयेगे अत्याचार
लूट गयी पहचान चौड़ी हुई विषमता की दीवारे
आदमी आदमी कहलायेगा जब दीवारे ढह जायेगी
आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी.....
ज्ञान की तलवार श्रम की पतवार अब पास हमारे
जातिवाद के खिलाफ और हक की लड़ेगे लड़ाई
बुध्दभूमि पर अब विषमता ताण्डव ना कर पायेगी
हक की क्रान्ति का करे ऐलान वरना आंख बरसती रह जाएगी
आओं करे ललकार तब तरक्की पास आयेगी.....

अधिकार

उठो वंचित,शोषित मजदूरों,
कब तक जीवन का सार गंवाओगे
कब तक ढोआगे रिसते जख्म का बोझ
कब तक व्यर्थ आंसू बहाओगे
तुम तो अब जान गये हो
सपने मार दिये गये है तुम्हारे साजिश रचकर
तुम्हारे पसीने ने सम्भावनाओं को सींचे रखा है
ललचायी आंखों से राह ताकना छोड़ दो
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
बन्द नही खुली आंखों से देखो सपने
कब तक बन्द किये रहोगे आंखे भय से
बन्द आखों के टूट जाते है सपने,
तुम यह भी जानते हो
बन्द आंखों का टूट जाता हैा सपना
याद है आंधियों से टिकोरे का गिरना
शोषित हो अब सबल कर दो मांग प्रबल
सब खोया वापस तुम पा सकते हो
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
बेदखल हुए तो क्या है तो अपना
मांग पर अटल हो जाओ
देखो रोकता है राह कौन ?
अधिकार की जंग में शहीद हुए तो
अमर हुए अपनों के काम आये
बहुत पीये गम,सम्मान का मौका मत गंवाओ
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
गुजरे दुख के दिन पर शोक मनाने से क्या होगा ?
भय भूख में जीने वालो,
कर दो न्यौछावर जीवन को
वक्त आ गया हिसाब मांगने
सम्मान से जीने का अधिकार मत मरने दो
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
गम के आंसू में जीये,

अनगिनत बार चूल्हे से नही रूठा धुंआ
अत्याचार की उम्र बढाने वालों
दर्द का जहर पीने वालों
हर पल चौखट पर तुम्हारी गरजता पतझ़ड
उत्पीड़न,जुल्म,शोषण के विरान में तपने वालों
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
लूटा गया हक तुम्हारा जानता जहान सारा
फिजां में हक की गंध अभी बाकी है
अत्याचार की तूफानों ने किया तुम्हारा मर्दन
अत्याचार शोषण के दलदल से बाहर आओ
लूटा हुआ हक वापस लेने की हिम्मत कर लो
बदले वक्त में समानता का नारा बुलन्द कर दो
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
नफरत का बीज बोने वालों ने,
दर्द के सिवाय और क्या दिया है ?
अंगूठा काटने,धूल झोंकने के सिवाय किया क्या है ?
चेतो खुली आंख से सपने देखो
बहुत ढोया अत्याचार का बोझ
संविधान की छांव उपर उठ जाओ
विषमता का कर बष्हिकार,मानवीय समानता का हक ले लो
अब तो तनकर अधिकार की मांग कर दो....
00000

दीवार को ढ्हा दो

सूना सूना अंगना उदास है खलिहान,
प्यासी प्यासी निगाहें,करे विषपान
राह में बिछे कांटे, उखड़ा उखड़ा स्वाभिमान
कल से उम्मीदें
आज हर दीवारें ढ्हा दो.....
तरक्की से पड़ा दूर है आदमी, तुम भी हो
आदमी को मान दो
रिसते जख्म का भार उतार दो
उजड़े हुए कल को आज संवार दें.....

माटी की काया माटी में मिल जायेगी
आज आसमान पर कल जमीं पर आना है
होगे विदा होओगे जहां से बहुत याद आओगे
बन्द हाथ आये खुले हाथ जाना है
थम गया जो उसे गतिमान कर दो
आदमी हो दीन वंचित को उबार दो.....
जिन्दगी बस पानी का है बुलबुला
पल में जीवन पल में मरन
कभी दिन तो कभी डरावनी रात है
तनिक छांव तो दूसरे पल चिलचिलाती धूप है
ढो रहा बोझ जो मुश्किलों का, बोझ उतार दो
आदमी को बराबरी का अधिकार दो.....
बुराईयों के दलदल फंसे आदमी की सांस है उखड़ रही,
उखड़ती सांस को प्यार की बयार दो
जुड़ सके तरक्की की राह,अवसर की बहार दो
संवर जाये दीन वंचित का कल आज तो दुलार दो.....
बवण्डरों के चक्रव्यूह में हुआ कंगाल
सम्मान से हाथ धोया ,
जख्म पर लगा भेदभाव का मिर्च लाल
टूटे पतवार से जीवन नइया खे रहे ,
आदमी के हाथ मजबूत कटार दो
छोड़कर श्रेष्ठता का स्वांग आदमी को गले लगा लो
आदमी हो आदमियत की आरती उतार लो
नीर से भरे नेत्र की बाढ़ थम जायेगी
आदमी की घोर स्याह रात कट जायेगी
पीयेगा आंसू,कब तक कायम रहेगा अंगने का सूनापन
मजदूर वंचित को संभलने का हर औजार दो
आदमियत की कसम उठो
पीड़ित वंचित को भरपूर प्यार दो
विहस उठेगा कोना कोना
विकास की बयार द्वार जब पहुंच जायेगी
धनधान्य हो उठेगा उसका अंगना
वंचित भूलकर सारे दुखडें झूम उठेगा
आदमी की पीर को समझो प्यारे
ऊंच–नीच अमीर–गरीब की दीवार को ढहा दो

उठो आदमी हो,आदमी की ओर हाथ बढा दो.....

नयन बरस पड़े.....

नयनो की याचना से नयन बरस पड़े
बिगड़ी तकदीर देख भौंहे तन उठी
दर्दनाक पल हर माथे मुसीबतों का बोझ
वंचितों की बस्ती में जख्म की टोह
चहुंओर धुआंधुआं दीनता के पांव जमें
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....
अपवित्र बस्ती के कुयें का पानी
जख्म रिस रही आज भी पुरानी
लकीरो का जाल वंचित जी रहा बेहाल
गुलामी के दलदल भूख दे रही ताल
आजाद देश में वंचित पुराने हाल पर खड़े
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....
आजाद हवा वंचितों का नही हुआ उध्दार
रूढीवादी समाज ठुकराया जाना संसार
छिन गया मान किस्मत पर बैठा नाग
बेदखल जड़ से दोषी बना है भाग्य
आज भी अरमान के पर है उखड़े
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....
भेद,भूख बीमारी से जा रहे नभ के पार
छोड़ वारिस के सिर कर्ज का भार
श्रेष्ठ बनाये दूरी वंचित के जनाजे से भरपूर
मानवता तड़पे देख आदमी की श्रेष्ठता का कसूर
वंचितों की बस्ती में दीनता और निम्नता के खूंट है गड़े
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....
रूढीवादी समाज श्रेष्ठता की पीटे नगाड़ा
श्रेष्ठ छोटा मान वंचित को हरदम है दहाड़ा
अर्थ की तुला पर व्यर्थ शोषित समानता न पाया
कहने को आजादी आंसू पीया, गम है खाया
तरक्की और समानता के आंकड़े कागजो में भरे पड़े
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....
बस्ती में कब आयेगी शोषित बांट जोह रहा
पेट की भूख खातिर हाड़ निचोड़ रहा

समाज और सता के पहरेदारों सुन लो पुकार
वंचित करे सामाजिक समानता की गुहार
आक्रोश बने बवण्डर उससे पहले समानता का ले झण्डा निकल पड़े
नयनो की याचना से नयन बरस पड़े.....

श्रमवीर

अपनी ही जहां में घाव डंस रही पुरानी
शोषित संग दुत्कार भरपूर हुई मनमानी
लपटों की नही रूकी है शैतानी
शोषित भी खूंटा गाड़ खड़ा हो जायेगा ।
ढह जायगी दीवारे रूक जायेगी मनमानी
तिलतिल जलता जैसे तवा पर पानी
अंगारों मे जलता,कंचन हो गया है राख
हाड़फोड़ नित नित पेट की बुझाता आग
रोटी और जरूरते नही वह चाहे सम्मान
जीवन में झरता पतझर निरन्तर उसके
बूढे अम्बर को ताकता कहता बश्खो पानी
मेरे अंगना अब कब बसन्त आएगा ।
शोषित जग को गति देता
वंचित की गति को विषमतावादी करता बाधित
खेत खलिहान या कोई हो निर्माण का काम
पसीने के गारे पर थमता शोषित के
द्वार दहाड़ता मातमी गीत हरदम
भूख,अशिक्षा,भेदभाव की बीमारी बेरोजगारी और भूमिहीनता
ढकेलती रहती दलदल में सदा
मुसीबतो का बोझ ढोता,तथाकथित श्रेष्ठ समाज को खुशी देता
ना चिन्ता उसकी ना कोई सुधि है लेता
श्रेष्ठता का दम भरने वालों हाथ बढाओ
शोषित की चौखट सावन आ जायेगा ।
ऋतुओ की तकदीर संवारता,खुद जीता विरानों में
दिल पर वंचित के घाव होता नित हरा
नई घाव से नहीं घबराता
क्योंकि चट्टान उसके सीने को कहते हैं
थाम लिया समता की मशाल डंटकर तो शोषक घबरा जायेगा ।

शोषित दलित श्रमवीर उसके कंधे पर दुनिया का भार
तकदीर में लिख दिया आदमी अंधियारे का आतंक
थम गये हाथ अगर तो होंठ पर नाचेगी स्याह
समानता के द्वार खोलो,ना दो शेषितश्रमवीर को कराह
मिटा दो लकीरें वरना वक्त धिक्कारता जायेगा ।

मशाल

समता का पथ ना हो विरान कभी
मानव है सच्चे समता की राह चल सभी
विषमता की कब्र पर समता के पांव बढे निरन्तर
ना रूके कभी इसलिये कि मसीहा थक गये कई
जहां वे रूके वहीं से तुम चलो.....
दिल पर चोट है शीश पर आसमान
जातिभेद की राह में समता की छांव
चल रहा रातदिन जातिभेद का षणयन्त्र
मौन धरती पर समता का रंग पोत दो
कराह रहे दर्द से जो उन्हे साथ ले लो.....
ना ताको पीछे, वहां भयावह निशान है
समता की राह नित जा चलता
कब मिलेगी बराबरी नहीं थाह
आखिरी सांस तक चलते रहें
थमती है सांस तो थमने दो,
विषमता की गोद ना मन बहलाओ
मुस्कराओगे मौन धरती पर एक दिन
क्योंकि समता की राह थे चले
जीवन पुष्प झरे उससे पहले और पुष्प खिलने का अवसर दो
तुमने जो जहर पीया आने वालो तक मत पहुंचने दो
कर्मवीर श्रमवीर,शूरवीर समता की राह बढे चलो.....
ना किया समता स्वर उुंचा तो
रह जायेगी कराहती शोषितों की बस्ती
समता का पुष्प्प नही खिला तो
विषमता का झलकता रहेगा जाम
संविधान से सम्भावना है
समता की राह सच्ची सद्भावना है
भेद का पिशाच अधिकारों को न डंसे

थामकर हक की लाठी निकल पड़ो
आदमी हो आदमी का हक तो मांग लो.....
समता का नही मिला मान तो
वंचित का जीवन रह जाएगा श्मशान
मरकर जीना आदमियत का है अपमान
स्वाभिमान से जीना है ,दिन बिते या बरस ढले
समता की राह पर बढे चलो.....
छल कर किसी युग आदमी अंधियारा दिया
संघर्षरत् जल रहा जीवन का दीया
कांटों की नोंक पग पग पर जला
इंसानियत का दुश्मन पल पल छला
वंचित का रो रोकर हीया जहर पीया
ना पीओ भेद का जहर ना पीने दो
हे समता के पथिक बढे चलो.....
जाग चुका है जज्बा स्वाभिमान से जीने का
अंधियारे के आगे उजियारा हारेगा नही
आंधी कोई सद्भावना को रौद नही पायेगी
समता का पथिक ध्रुवतारा की तरह चमकेगा
चले थे बुध्द समता की राह तुम भी चलो
जले थे अम्बेडकर दीये की तरह
मानवता का उंचा रहे भाल तुम भी जलो
समता की राह न हो विरान
वक्त है पुकारता, तुम भी चलो.....
भेद की तूफान नित कर रहा अत्याचार
तड़प रहा आदमी समता की प्यास से
जातिपांति का बवण्डर थम जाये
जुल्म झेल रहा आदमी विहस जाये
समता की जंग को मत रूकने दो
जलती रहे समता की मशाल
लगे थका थम रहा कोई सिपाही,
समता की मशाल थाम बढे चलो...

बस अब ना इन्तजार.....

मुम्बई की छाती पर बरसे बारूद
दुनिया देखी देश दहल गया
जाबांजो के हौशले बुलन्द आंतकवादी हुए ढेर
बित रहे दिन व्यथा और सन्त्रास में
आमंची मुम्बई पर भारत का हुआ कब्जा
नहीं छंटे बादल बेचैनी के
बारूद के ढेर पर जैसे खुद को पा रहे सभी
आतंकवादियों के बढ रहे हौशले
पाक के नापाक इरादे,बस अब ना इन्तजार
इटस् ए वार लाइक इमरजेसी कह रही सरकार
हो एलओसी पर डेरा फौज का,
बस और ट्रेन के रद्द हो करार
देश का हर नागरिक बने जिम्मेदार
युध्दविराम के टूटे समझौते ना हो इन्तजार
आतंकी हमले का पाक है जिम्मेदार
जख्म पुराने थे कई नये भी गहरे मिले
करकरे,सालस्कर गजेन्दसिंह समेत कई ना रहे
भारत पर कहर पाक मुस्कराया है
बैतुल्ला और मौलवीफजलुल्लाह को राष्ट्रभक्त बताया है
ताज ओबेराय और नरीमन हाउस के यौवन पर प्रहार
उजडी मांग, कई हुए अनाथ उनके ख्वाबो का क्या होगा ?
शहीद हुए जो फिर कहां मिल पायेगे, ?
देशवासी खून के आंसू रो रहे
पाक के इरादे ना नेक वह तो विष बो रहा
भारत की छाती के घाव को घाव समझो
कूद पड़ों आतंक के खिलाफ दुनिया वालों
कर दी देरी अगर तो एक दिन ,
ये इंसानियत के दुश्मन सकून छिन लेगे
सदमे,गुस्से और आक्रोश में है आवाम यहां
देखो पाक बदल रहा है बयान वहां
खून के उठे फव्वारे, चीखे चहुंओर झुलसा आसमान
अब क्या चाहिये सबूत मरे विदेशी मेहमान
दुनिया वालो आओ मिलकर मिटा दे,
आतंकवादियो के नामो निशान,
बस बहुत हुआ इंतजार

शान्ति सकून से है जीना तो ठान लो रार
ना हो जन–धन की हानि ना बहे खून के आंसू
कूद पड़ों आतंकवाद के खिलाफ
बस अब ना करो इंतजार.....

00000

दिल से बाहर करके तो देखा.....

जातीय नफरत का बारूद ना सुलगाओ
समता का गंगाजल अब द्वार–द्वार पहुचाओ
जातिभेद शीतयुध्द है,इस युध्द को अबबन्द करो
जातिभेद तोड़ो मानवता को स्वछन्द करो ।
ना डंसे भेद समभाव की बयार बह जाने दो
नफरत नही स्नेह का स्पर्श दे दो
भारतभूमि ना बने जातिभेद की मरघट अब
तोड़ बंधन सारे समता का दीया जला दो ।
धरती सद्भाव से होगी पावन
शान्ति भेद से नहीं एकता में बरसता है
आदमी जाति से नही कर्म से श्रेष्ठ बनता हैं
ऊंचनीच से नही सद्भाव से सद्प्यार फेलता है ।
जाति के नाम पर ना अत्याचार करो अब
आगे बढ शोषित वंचित को गले लगाओ
पतवार समता की बन बुध्द की राह हो जाओ
दंश ढो रहे जो उन्हे समता का अमृत चखाओ ।
जिसके हृदय में मानवता बसी है
वही जातीय भेदभाव को धिक्कारता है
जिसके सीने में दर्द है वंचित के प्रति
तोड़बाधाये सारी वंचित से हाथ मिलाता है ।
घाव है शोषित के हृदय पर विकराल
वह समानता की छांव में हर दर्द भूल सकता है
कर्म और फर्ज पर मिटने वाला उत्पीड़न झेल रहा
रिसते जख्मों का एहसास उध्दार का सकता है ।
जातिपांति का किला मजबूत अब तोड़ना होगा
विषमता जब समता का रूप धर लेगा
जातीयभेद का अंधियारा खत्म हो जायेगा
भारतभूमि पर समता का दीप जल जायेगा ।
हाथ जोड़कर बार बार कहता हूं

जहां गरजे भेद वहां स्नेह लुटाओ
जब जब हो भेद का वार तुम पर फूल चढाओ
बोये भेद के बीज जो सद्भाव सीखाओ ।
नफरत से सुखशान्ति नही आ सकती धरा पर
जातिभेद का सच्चे मन से त्याग करके देखो
आदमी हुए देव कई बहुजनहिताय की राह चलकर
सच मानो विषमता हारेगी विजय होगी तुम्हारी
जातिपांति को दिल से बाहर करके तो देखो।
00000

एक बरस और.....

मां की गोद पिता के कंधों
गांव की मांटी और टेढीमेढ़ी पगडण्डी से होकर
उतर पड़ा कर्मभूमि में सपनों की बारात लेकर ।
जीवन जंग के रिसते घाव है सबूत
भावनाओं पर वार घाव मिल रहे बहुत
सम्भावनाओं के रथ पर दर्द से कराहता भर रहा उड़ान, ।
उम्मीदों को मिली ढाठी बिखरे सपने
लेकिन सम्भावनाओं में जीवित है पहचान
नये जख्म से दिल बहलाता पुराने के रिस रहे निशान ।
जातिवाद धर्मवाद उन्माद की धार,
विनाश की लकीर खींच रही है
लकीरों पर चलना कठिन हो गया है
उखड़ेपांव बंटवारे की लकीरों पर,
सद्भावना की तस्वीर बना रहा हूं ।
लकीरों के आक्रोश में जिन्दगियां हुई तबाह
कईयों का आज उजड़ गया कल बर्बाद हो गया
ना भभके ज्वाला ना बहें आंसू
सम्भावना में सद्भावना के शब्द बो रहा हूं ।
अभिशापित बंटवारे का दर्द पी रहा
जातिवाद धर्मवाद की धधकती लू में
बित रहा जीवन का दिन हर नये साल पर ,
एक साल का और बूढा हो जाता हूं
अंधियारे में सम्भावना का दीप जलाये
बो रहा हूं सद्भावना के बीज ।

सम्भावना है दर्द की खाद और आंसू से सीचें बीज
विराट वृक्ष बनेगे एक दिन
पक्की सम्भावना है वृक्षों पर लगेगे
समानता सदाचार सामन्जस्य और आदमियत के फल
खत्म हो जायेगा धरा से भेद और नफरत ।
सद्भावना के महायज्ञ में दे रहा हूं
आहुति जीवन के पल पल का सम्भावना बस
सद्भावना होगी धरा पर जब, तब ना भेद गरजेगा
ना शोला बरसेगा और ना टूटेगे सपने
सद्भावना से कुसुमित हो जाये ये धरा
सम्भावना बस उख़डेपांव भर रहा उ़डान
सर्वकल्याण की कामना के लिये
नही निहारता पीछे छूटा भयावह विरान ।
मां की तपस्या पिता का त्याग,धरती का गौरव रहे अमर,
विहसते रहे सद्कर्मो के निशान
सम्भावना की उ़डान में कट जाता है
मेरी जिन्दगी का एक और बरस
पहली जनवरी को .....
00000

मुट्ठी भर आग

मुट्ठी भर आग ने सुलगा दी है
अरमानों की बस्ती
ल़ड रहा है आदमी अभिमान के तेग से
आग से उठे धुयें में दब रही है चीखें
हाथ नही बढ रहा है कमजोर की ओर
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
मुट्ठी भर आग में सुलग रहा
अमानुष मान लिया गया है
पसीने के साथ धोखा हा रहा है
और हक का चीरहरण भी
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
मुट्ठी में आग भरने वाले
तकदीर का लिखा कहते हैं
मरते सपने ढोने वाले छल कहते हैं

दंश देने वाले तकदीर बनाने वाले बनते हैं
मुट्ठी भर आग में सुलह रहा आदमी
वंचित हो गया है
समानता और आर्थिक सम्पन्नता से भी
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
मुट्ठी भर आग ने बांट दिया है
आदमी को खण्ड खण्ड
मुट्ठी में आग भरने वाले गुमान कर रहे है
पीड़ित के मरते सपने और बिखराव को देखकर
मुट्ठी भर आग में सुलग रहे आदमी को
छोटा मान अत्याचार कर रहे है
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
मुट्ठी भर आग से उपजा धुआ
चीरकर पीड़ितों की छाती
दुनिया की नाक के आरपार होने लगा है
आग में जल रहा शीतलता की बांट जोह रहा
मुट्ठी भर आग ऐसा गहरा और बदनुमा दाग
छोड़ चुकी है,
धुलने के सारे प्रयास ब्यर्थ हो जा रहे है
अत्याचार बढ जाता है सिर उठते ही
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
मुट्ठी भर आग में सुलग रही है
मानवता और बढ़ रहा है उत्पीड़न
मुट्ठी भर आग अर्थात जातिवाद से
मुट्ठी भर आग से उपजी पीड़ा कहीं आक्रोश बने,
उससे पहले चल पडें समानता की राह
क्योकिं आग छिन रही है सकून,सद्भावना
बांट रही है नफरत
मुट्ठी भर आग अस्तित्व में आते से ही ।
00000

जीवन जंग हो गया है हर पल बरस रही है आग
माथे चिन्ता हाथ में छाले लोग मान रहे भाग्य
नफरत का विषबीज वृक्ष बना है डर आज
भुगत राह बिन अपराध की सजा मानकर कुराज

हे गुजरे मुसाफिरों तुमको नमन् है हमारा
दुआये मुझे भी देना एहसान होगा तुम्हारा ।
तार तार खिस्से,हर हाल भजता नाम तुम्हारा
तुम्हारी ज्योति, जीवन जंग की बनी है सहारा ।
हे मुसाफिरों तुमको नमन् है हमारा....................

फना

मैं वन्दना करता हूं ऐसे इंसान की
बोता है बीज जो सद्भावना का
रखता है हौशला त्याग का ।
मेरा क्या मैं तो दीवाना हूं
इंसानियत का,
भले ही कोई इल्जाम मढ़ दे
या कहे पाखण्डी
या दे दे दहकता कोई घाव नया।
निजस्वार्थ से दूर
पर–पीड़ा से बेचैन इंसान में
भगवान को देखता हूं ,
दूसरो के काम आने वालों की,
वन्दना करता हूं ।
साजिशों से बेखबर,
सच्चा इंसान खोजता हूं
जानता हूं हो जाऊंगा फना
फिर भी डूबता हूं
तलाशने पाक सीप
हो जिसमें संवेदना,
उसे माथे चढाना चाहता हूं ।
सच ऐसे लोग परमार्थ के यज्ञ में
होकर फना देवता बन जाते है,
ऐसे देवताओ की वन्दना करता हूं ।
00000

वक्त के सतायों को पहचान
मंजिले भी करवटें बदल लेती ।
हताश कहां कहां पटके माथा,

हर ओर तो अनदेखी होती।।

00000

मर रहा आदमी

मर तो रहा आदमी यहां
रिश्ते नाते कहां मरते है ।
रिश्ते तो अजर अमर हैं ।
जीवन का ठिकाना क्षण भर का नही है ।
रिश्ता है तो आदमियत जिन्दा है ।
आदमियत जिन्दा है तो,
आदमी सभ्य वाशिन्दा है ।
रिश्ता जब टूट जाता है,
आदमी आदमियत से बिछुड जाता है ।
रिश्ते ही तो आदमी को ,
सामाजिक प्राणी बनाते हैं ।
अच्छे बुरे की पहचान करवाते है ।
आदमी और आदमियत का ज्ञान करवो हैं ।
रिश्ते तो आज भी अमर है,
शरीर ही तो नश्वर है ।
सच मर रहा आदमी,
रिश्ते नाते नहीं मरत हैं ।
आओ अनश्वर रिश्ते को,
सद्प्यार की महक दे,
क्योकि रिश्ते नहीं मरते
मरता है तो बस आदमी.....

देखा है

इसी शहर में बेगुनाह की,
अर्थी उठते हुए देखा है ।
उन्माद की आग में,

आशियाना जलते हुए देखा है ।
आदमी को आदमी का,
खून बहात हुए देखा है ।
इसी शहर में देवालय के द्वार,
कत्ल होते देखा है ।
बेरोजगारी की उमस में ,
हड़ताल होते हुए देखा है ।
न्याय की पुकार मे,
अन्याय होते हुए देखा है ।
अपनों को माया की ओट,
बैर लेते देखा है ।
इसी शहर में ,
रिश्तेां को तड़पते हुए देखा है ।
दीन के आंसू पर लोगों को ,
मुस्कराते हुए देखा है ।
मद की ज्वाला में,
गरीब को तबाह करते हुए देखा है ।
इसी शहर में,
कमजोर को बिलखते हुए देखा है ।
श्रम की मण्डी में ,
भेद की आग लगते हुए देखा है ।
भेदभाव की खंजर से,
आदमियत का कत्ल होते हुए देखा है ।
दम्भियों को ,
दीन के अरमानों को रौदे हुए देखा है ।
सफेद की छांव बहुत कुछ,
काला होते हुए देखा है ।
शहर की चकाचौंध में ,
दीनों के घर उजड़ते हुए देखा है ।
शूलों की राह,
जीवन होता तबाह हमने देखा है ।
इसी शहर में हर जुल्म जैसे,
खुद पर होते हुए देखा है ।

उसूल

जमाने की भीड़ में हम ना खो जाये
न्हीं इसका गम मुझे ।
गम है यही कि,
वसूलों का जनाजा ना निकल जाये ।
सींचे है लहू पसीने से,
जो किया है त्याग विषपान कर ।
जिन्दा रखने के लिये,
आदमियत का सोधापन ।
थाती तो यही है,
मेरी जिन्दगी भर की ।
परायी दुनिया में वसूलों के दम जिन्दा रहा ।
खौफ लगने लगा है ।
वसूलों को रौदने का षणयन्त्र होने लगा है ।
नहीं बुझी है प्यास भेद भरे जहां में ।
आसूंओ से प्यास बुझााने लगा हूं ।
सजग रहता हूं हर दम,
कहीं मर ना जाये
मेरे उसूल,
किसी फरेब में फंसकर .....

बचपन

सोचा था बड़े मन से
बच जायेगा
बचपन अपना ।
न बचा न पूरा हुआ सपना ।
भावनाओं के साथ,
आकाश छूने की लालसा ।
जिन्दगी चीज क्या ?
बस खेल खाकर सो जाना ।
आत्मीय जनों का प्यार,
तहे दिल से खुश हो जाना ।

सबका स्नेह सब में बांट देना ।
अनजाने में बचपन सरक गया ।
बचपन पर सवार,
जवान हो गया ।
जवानी के साथ,
सान्ध्य की राह चल पड़े
सोचा था क्या ... ?
क्या से क्या हा गये ... ?
बचपन गया...
जवानी गयी.....
बूढे हो गये ।
सोचा बड़े मन से,
होगा बचपन का साथ ।
सोचा धरा का धरा रह गया,
बचपन छोड़ गया हाथ ।.....

दौर

हिंसा का दौर अहिंसा का बहाना,
धर्म के नाम पर खून,
कैसा जमाना..... ?
मकसद बस याद ,
आदमी को रूलाना ।
दौर बुरा खण्ड –खण्ड हुआ जमाना ।
छायी प्रेत छाया,
सिर उठाता दरिन्दा ।
भय,भूख आदमी मारा जाता जैसे परिन्दा ।
आदमी की भीड़,
आदमी हुआ बेगाना ।
तबाहियों का दौर
कैसे..... ?
गूंजे खुशी का तराना ।
परायी दुनिया क मुसाफिर,
मोड़ दे धारा ।
अमन की बहे गंगा,

दमक उठे चमन हमारा ।

चिराग

आओ एक चिराग जलाये ।
अब ना कोई,
अंधेरा रास नचाये ।
भय,भख गरीबी,
ना इस धरती पर छाये ।
एात्मकता की,
ऐसी मिशाल जलाये ।
संवेदनशीलता का ,
सच्चा एहसास कराये ।
धार्मिक कट्टरता,
ना फन फैलाने पाये ।
शान्ति का संदेश,
जन जन तक पहुंचाये,
विध्वन्स ना,
तरक्की अमन की बा बतायें ।
बन्धुत्व सामाजिक परिवर्तन का पाठ पढाये ।
ना उगले शोले ,
शान्ति का संदेश फैलाये ।
बढते रहो,
एकता बन्धुत्व की राह,
कदम ना डगमगाये ।
ना छाये अंधियारा,
आओ एक चिराग जलाये .....नन्दलाल भारती

मां तुम्हे सलाम

मां तुम्हारी देह

27 अक्टूबर 2001 को
पंचतत्व में खो गयी थी
मां मुझे याद हो तुम
तुम्हारी याद दिल में बसी है ।
आज भी तुम्हारा एहसास
साथ साथ चलता है मेरे
बिल्कुल बरगद के छांव की तरह ।
दुख की बिजुडी जब कड़कती है
ओढा देती हो आंचल मेरी मां
अन्दाजा लग जाता है मुझे ,
तुम्हारे न होकर भी होने का ।
सुख–दुख में तुम्ही तो याद आती हो
तुम्हारी कमी कभी कभी बहुत रूलाती है ,
जब ओसारी में गौरैया,
जूठे बर्तन के फेंके पानी से
जूठन चून कर अपने,
बच्चो के मुंह में बारी–बारी से डालती है ।
तब तुम और तुम्हारा संघर्ष बहुत याद आता है
उभर आता है,
धुधली यादों में बसा मेरा बचपन भी
मां तुम भी उतर आती हो
परछाई स्वरूप मेरे सामने
और
रख देती हो सिर पर हाथ ।
कठिन फैसले की जब घड़ी आती है
तब तुम्हारी तस्वीर उभर आती है
जीवित हो जाती हो जैसे तुम
हृदय की गहराईयों में
राह बदल लेती है हर मुश्किले ।
मां तुम्हारे आशीश की छांव
फलफूल रहे है तुम्हारे अपने
सींच रहे हैं तुम्हारे सपने
और
रंग बदलर्ती दुनिया मे, टिका हूं मैं भी ।

मां तेरे प्रति श्रध्दा ही जीवन का उत्थान है
यही श्रध्दा देती रहेगी हमें
तुम्हारी थपकियों का एहसास भी ।
मां तुम तो नही हो, देह रूप में
विश्वास है,
तुम मेरी धड़कन में बसी हो
हर माताओ के लिये ,
गर्व का दिन है मातृदिवस
आराधना का दिन है आज का,
मेरी दुनिया है मेरी मां स्वर्गीय समारी,
करते है वन्दना तुम्हारी
जीवनदायिनी पल पल याद आती है तुम्हारी
मरकर भी अमर है तेरा नाम
हे मां तुम्हे सलाम..... हे मां तुम्हे सलाम.....

नन्दलाल भारती